अध्याय प्रथम

शोध परिचय

अध्याय प्रथम

शोध परिचय

1.1 प्रस्तावना

समायोजन व्यक्ति के द्वारा कि जाने वाली वह सचेतन क्रिया है। जिसमे वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति एवं परिस्थितयों में संतुलन स्थापित करता है तभी वह अपना कार्य व्यवहार अचित ढंग से करने मे समर्थ होता है। समायोजन के द्वारा हम अपने आप को बदलती परिस्थितियों के अनुसार बदलने का प्रयत्न करते है तो दूसरी और समायोजन हमें ऐसे शक्ति और सार्थकता भी देता है कि हम परिस्थितियों को ही बदल सकें।

समायोजन हमें हमोर और हमारी परिस्थितियों के बीच बनाना होना है। अतः उसके लिए अपने आप को बदल कर संतुलन बनाया जा सकता है। अर्थात हालातों से समझौता किया जा सकता है। व्यक्ति की एक दशा, मनोदशा को ही प्रकट करती है। इस मनोदशा पर अनूकुल एवं प्रतिकूल प्रभाव उसकी अपनी संतुष्टि का ही पड़ता है और वह कितना संतुष्ट है इसकी कुंजी उसकी इच्छा और आवश्यकताओं की संतुलित तथा इस संतुष्टी से जुड़ी उसकी उम्मीदों पर आधारित होती है। एक बालक तभी संतुष्ट होता है। जब वह अपने आप के समायोजन अनुभव करना है।

1.2 सामाजिक समायोजन

व्यक्ति को अपने आप से संतुष्ट तथा समायोजन होने की आवश्यकता होनी है। उतना ही अपने सामाजिक परिवेश से जुड़ी बातों तथा व्यक्ति के साथ उचित ताल–मेल बनाये रखकर समायोजित रहने की होती है। उसे अपने परिवेश में तथा उसमे उपलब्ध परिस्थितियों मे भी संतुष्ट अनुभव करना चाहिए। तभी वह ठीक तरह से समायोजन रह सकता है। सामाजिक परिवेश का दायरा उसके घर परिवार से शुरू होकर विद्यालय को छुता है। एक बालक पूर्णतः सामाजिक समायोजन तब प्राप्त करता है। जब वह घर, परिवार, मित्र, संबंधी पड़ोस, समुदाय एवं विद्यालय में समायोजित हो तो वह बालक पूर्णतः सामाजिक समायोजित हो सकता है। घर परिवार से लेकर मित्र, सगे–संबंधियों, पड़ोसी या समुदाय, समाज एवं विद्यालय में रहने वाले सहपाठिया तथा संपूर्ण सामाजिक होने के लिए व्यक्ति को किस प्रकार प्रयत्न करने चाहिए। इस दिशा मे पहली बात तो यह है कि उसे सामाजिकता का पाठ सही ढंग से पढ़ना चाहिए तथा उसे सच्चाई से व्यवहार में लाना चाहिए।

उसमे सभी सामाजिक गुणों का समावेश होना चाहिए तथा अधिकार के स्थान पर कर्त्तव्यों के पालन कि अधिक इच्छा होनी चाहिए। समाज के नियम उसकी आचार संहिता समाज तथा विशेषकर अपने समुदाय की विशेष अभिवृत्तीयों संस्कारों तथा रिती–रिवाजों से परिचित होना चाहिए तथा उनका एक उचित सीमा तक पर्याप्त सम्मान करना चाहिए। ऐसी अवस्था में उसे अपने सामाजिक परिवेश मे ठीक प्रकार समायोजित होने मे उचित सहायता मिल सकती है। व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है। वह अपनी आवश्यकताओं के लिए रूप में समायोजन का तात्पर्य यह है कि उक व्यक्ति विभिन्न परिस्थितियों मे कितनी दक्षता के साथ अपके कर्त्तव्यों का पालन करता है। जब हम समायोजन को एक उपलब्धि मानते है, तो हम समायोजन की गुणवत्ता के मूल्यांकन के लिए कुछ मापदंड निर्धारित करते है। प्रक्रिया के रूप में समायोजन अध्यापकों के लिए महत्वपूर्ण होता है। विद्यार्थियों का समायोजन व्यापक रूप से जिस वातावरण मे वह रहते है उससे प्रभावित होता है।

1.3परिभाषा का अर्थ

समायोजन

एल.एस शेफर – "समायोजन वह प्रक्रिया है। जिसके द्वारा कोई जीवधारी अपनी आवश्यकताओं तथा इस आवश्यकताओं की संतुष्टि से संबंधित परिस्थितियों मे संतुलन बनाये रखना है।

उपलब्धि

उपलब्धि – अभिप्रेरणा का आधारभूत लक्ष्य उपलब्धि होता है जो उपलब्धि के लिए कोई काम करते है उन्हें उपलब्धि अभिप्रेरणा द्वारा प्रेरित माना जाता है। हम जानते है कि अभिप्रेरिकों को विभिन्न वर्गो मे बाँटा जा सकता है। जब कोई व्यक्ति विपरीत लिंग के साथ संबंध रखने का प्रयास करता है, तो कहा जा सकता है।

1.4 अध्ययन का महत्व एवं आवश्यकता

प्रस्तुत पूर्व में किये गये शोधों में सामाजिक समायोजन से संबंधित शोध कम मात्रा में प्राप्त होने के कारण शोधार्थी को सामाजिक समयोजना से संबंधित शोध करने कि जिज्ञासा है। शोधार्थी को आशा है कि इस शोध

द्वारा जो निष्कर्ष प्राप्त हुए, उससे विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन के प्रभाव को देखा जा सकेगा। यह जानकर हमें आने वाले समय में सामाजिक समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि को जानने में मदद मिलेगी इस शोध सर्वेक्षण के बाद प्रशासन को यह जानकारी प्राप्त होगी की विद्यालय में किस प्रकार की क्रियाएँ होने से विद्यार्थियों में सामाजिक समायोजन अधिक होकर शैक्षिक उपलब्धि को अधिक प्राप्त किया जा सकता है। शिक्षकों को बालकों के व्यवहार एवं सामाजिक समायोजन द्वारा किस प्रकार की शिक्षा दे सकते हैं। यह जानकारी प्राप्त हो सकती है। इस शोध द्वारा विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन से संबंधित समस्याओं के समाधान हेतु काम आने वाली जानकारियाँ प्राप्त हो सकती है।

इस शोध में हम दोनों और के विद्यार्थियों का अध्ययन करके (ग्रामीण शहरी) उनका आपसी समायोजन एवं शैक्षणिक उपलब्धियों से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य ज्ञान कर सकते है इन विद्यार्थियों में जो छात्रावास में रहकर उसी जवाहर नवोदय विद्यालय में पढते हैं उनकी समस्याओं एवं कठिनाईयों को जाना जा सकता है। साथ ही साथ उनकी आंतरिक शक्तियों को ीी पहचाना जा सकता है। तथा यहाँ विभिन्न शिक्षाप्रद कार्यशाला ै(मउपदंत) को आयोजित करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है तथ इनमें परस्पर समायोजन अच्छे ढंग से स्थापित हो ऐसा प्रयास किया जा सकता है।

जवाहर नवोदय विद्यालय की बालिकाओं का अध्ययन द्वारा हम इन बालिकाओं का जो परिवार से दूर रह रहे हैं जो ग्रामीण क्षेत्र से हैं। पढ़ने आये उन्हें एक परिवार जैसा वातावरण देने का प्रयास किया जा रहा है। तथा साथ ही साथ यहां पर संकुल भी उपलब्ध है जहां छात्रावास के छात्र–छात्राएं तो पढ़ते ही है साथ ही साथ सामान्य परिवार के आने वाले बालिका भी यहॉ शिक्षा अर्जित करते हैं। इस शोध में जवाहर नवोदय विद्यालय के बालिकाओं का समायोजन देख रहे हैं। जवाहर नवोदय विद्यालय में रहकर बालिका छात्रावास में पढ़ते हैं। जवाहर नवोदय विद्यालय में बच्चे 6वी कक्षा से पढ़ने आते हैं और शिक्षा प्राप्त करते हैं। इन विद्यार्थियों में छात्रावास में

रहकर उनकी समस्याओं एवं कठिनाईयों को जाना जा सकता है। साथ ही साथ उनकी आंतरिक शक्तियों को भी पहचाना जा सकता है।

जवाहर नवोदय विद्यालय में शिक्षा का वातावरण निर्मित करने में भौतिक एवं शैक्षिक सुविधाओं का महत्व है। यह पढ़ने में रूचि एवं निराशा दोनों ही उत्पन्न करने में सक्षम होता है। जिसका प्रभाव विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर दिखाई देता है।

जवाहर नवोदय विद्यालय का उद्देश्य वंचित वर्ग की बालिकाओं को शिक्षा की सुविधाए उपलबध कराकर उनकी शैक्षिक एवं सामाजिक प्रगति करना है। बालिकाओं को दी जाने वाली, शैक्षिक एवं भौतिक सुविधाएं पर्याप्तता एवं बालिकाएं इन सुविधाओं उपयोग उद्देश्य के अनुरूप कर पाती है या नहीं इसका अध्ययन करना और प्रदान की जाने वाली सुविधाओं या सामग्री के उपयोग में यदि कोई कमी है तो इसे दूर करने के लिए क्या किया जा सकता है यह जानने के लिए इस विषय पर अध्ययन आवश्यक है।

शोधार्थी को जानने की यह जिज्ञासा है कि जवाहर नवोदय विद्यालय में बालकों के सामाजिक समायोजन से उनकी शैक्षिक उपलब्धि को किस प्रकार प्रभावित करनी है। विद्यार्थी विद्यालय में पाठ्यक्रम एवं विद्यालय गतिविधियों सह पाठियों के साथ किस प्रकार समायोजित होते हैं। जिससे कि उनकी शैक्षिक उपलब्धि बढती है या कम होती है अनेक बालक विद्यालय में समायोजित नहीं हो पाते इससे उनकी बालिकाओं कि शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह जानने का प्रयास इन शोध अध्याय में किया गया है।

1.5 समस्या कथन

"जवाहर नवोदय विद्यालय की कक्षा 6वी की बालीकाओं के सामाजिक समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन"

1.6 शब्दाबलियों की परिभाषा व स्पष्टीकरण

(अ) सामाजिक समायोजन

पोनहेलर :– हम समायोजन शब्द को अपने आप को मनोवैज्ञानिक रूप से जीवित रखने के लिए वैसे ही प्रयोग में ला सकते हैं। जैसे की जीवशास्त्री अनुकूल (ADAPTION) शब्द का प्रयोग किसी जीव को शारीरिक एवं भौतिक रूप से जीवित रखने के लिए करते हैं।

बोरिस, लैगफिल्ड एवं बील्ड

सामाजिक समायोजन – विद्यार्थियों का विद्यालय में एक दूसरे के साथ समयोजन एक हर प्रकार से मिलकर रहना एवं अपनी बात को सभी विद्यार्थियों के साथ व्यक्त करना'' जिससे उनको अकेलेपन की अनुभूति न हो यह इस शोध के अनुसार समायोजन है।

(ब) <u>शैक्षिक उपलब्धि</u>

सुपर – एक उपलब्धि या क्षमता परीक्षण यह ज्ञान करने के लिए प्रयोग करता है कि व्यक्ति ने क्या और कितना सीखा तथा कोई कार्य कितनी भलिभॉत कर लेता है।

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने शोधानुसार कुछ परिभाषाये का निर्माण किया है, जो इस प्रकार है।

शैक्षिक उपलब्धि – ''शैक्षिक उपलब्धि से अशय है कि छात्रों को जो कुछ पढ़ाया व सिखाया गया है उसमें से उन्होने कितना सीखा है। यह ज्ञान करना शैक्षिक उपलब्धि है।''

1.7 अध्ययन के उद्देश्य

1. जवाहर नवोदय विद्यालय की बालिकाओं के विभिन्न विषयों की उपलब्धि का अध्ययन करना।
2. जवाहर नवोदय विद्यालय की बालिकाओं की सामाजिक समायोजन का अध्ययन करना।

3. जवाहर नवोदय विद्यालय की बालिकाओं की विषयवार उपलब्धि का सामाजिक समायोजन के साथ सहसंबंध का अध्ययन करना।

1.8 परिकल्पनाएँ

1. कक्षा 6वी की बालीकाओं के सामाजिक समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थकि संबंध नहीं है।

1.9 अध्ययन की सीमाएँ

- प्रस्तुत शोध महाराष्ट्र के गोदिया जिले के क्षेत्र में निहित है।
- प्रस्तुत शोध गोदिया जिले के नवेगावबाध में किया गया है।
- शोध मे केवल एक जवाहर नवोदय विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है जो गोदिया जिले मे हैं।
- शोध मे केवल 6वी कक्षा की बालिकाओं को सम्मिलित किया गया है।
- प्रस्तुत शोध मे विद्यार्थियों कि आयु 11 से 13 वर्ष के बीच है।
- प्रस्तुत शोध मे शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थीयों का चयन किया गया छै।
- प्रस्तुत शोध मे सी.बी.ई. विद्यालय जवाहर नवोदय विद्यालय बोर्ड महाराष्ट्र के विद्यार्थियों 6वी कक्षा का चयन किया गया है।
- प्रस्तुत शोध जवाहर नवोदय विद्यालय की कक्षा 6वी की छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन को लिया गया है।